व्यापक पैमाने पर हो जाती है ...**(समय की घंटी)**... तो मुझे लगता है कि इसका एक बहुत बड़ा प्रभाव पड़ेगा। महोदय, मैं आपसे यह भी कहना चाहती हूं कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में जो अभी नया डिपार्टमेंट खुला है - जराचिकित्सा डिपार्टमेंट ...**(समय की घंटी)**... इसको ध्यान में रखते हुए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में कन्सल्टेंट, रेज़िडेंट डॉक्टर एवं अन्य सहायक कर्मचारियों की संख्या कम है, उनको बढ़ाने के लिए और धनराशि बढ़ाने की जरूरत है...

MR. CHAIRMAN: Please. You have made your point. ...*(Interruptions)*... Now, Shrimati Darshana Singh.

SHRI ABIR RANJAN BISWAS (West Bengal): Sir, I associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI VINAY DINU TENDULKAR (Goa): Sir, I too associate myself with the issue raised by the hon. Member.

DR. AMAR PATNAIK (Odisha): Sir, I too associate myself with the issue raised by the hon. Member.

DR. FAUZIA KHAN (Maharashtra): Sir, I too associate myself with the issue raised by the hon. Member.

श्री सकलदीप राजभर (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं भी माननीय सदस्या द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

Successful completion of Tamil Sangamam Cultural Event at Kashi reflecting 'Ek Bharat, Shreshta Bharat' Vision

श्रीमती दर्शना सिंह (उत्तर प्रदेश) : माननीय सभापति जी, आपने मुझे शून्य काल में बोलने का अवसर दिया, इसके लिए आपका आभार। महोदय, अभी हाल ही में 19 नवम्बर से 16 दिसम्बर तक काशी में तमिल संगमम् कार्यक्रम का भव्य आयोजन हुआ। आजादी के अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर काशी-तमिल संगमम् ऐसी दो संस्कृतियों का सम्मिलन था, जो दक्षिण और उत्तर के मध्य प्राचीन से नवीन तक आचार-विचार, भाषा, साहित्य को एक सूत्र में बांधकर सांस्कृतिक समन्वय को मजबूत करता है।

हमारे यशस्वी प्रधान मंत्री जी द्वारा भारत की दो संस्कृतियों को मिलाने की कोशिश है, जो संभवतः हज़ार वर्ष बाद की गई। अंतिम तमिल संगम 10वीं शताब्दी में हुआ था। यह संगम प्रधान मंत्री जी के विज़न 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की दिशा में एक महान प्रयास है और इससे भावनात्मक एकता स्थापित होगी। मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि इससे पहले इस तरह का कोई

सकारात्मक प्रयास नहीं किया गया और इस देश ने लंबे समय तक सांस्कृतिक अलगाववाद का दंश झेला है।

हमारे प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में भारत की सांस्कृतिक एकता को पुनर्जीवित करने का जो प्रयास है, वह अपने आप में अद्वितीय और महान प्रयास है। इस संगमम् में ज्ञान के विभिन्न प्रारूपों, साहित्य, प्राचीन ग्रंथ, दर्शन, अध्यात्म, संगीत, नृत्य, नाटक, योग के साथ आधुनिक नवाचार, व्यापार विनिमय और नेक्स्ट टेक्नोलॉजी आदि पर सेमिनार, चर्चा, व्याख्यान आदि आयोजित किए गए।

यह भारतीय सनातन परम्परा के वशीभूत जनमानस में बसा "जंबूद्वीपे भारत खंडे आर्यावर्ते" एकात्मकता के वैदिक महामंत्र को साकार करने का आयोजन था।

विशेष बात यह रही कि यह आयोजन केवल काशी तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्य मंत्री योगी जी के कुशल नेतृत्व और प्रबंधन से काशी में आए तमिल भाई-बहनों को प्रयागराज एवं अयोध्या के भी दर्शन कराए गए, ...**(समय की घंटी)**... जो माननीय प्रधान मंत्री जी की सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की धारणा को और मजबूत करता है।

अतः मैं आपके माध्यम से सरकार से यह अनुरोध करना चाहती हूं कि भविष्य में इस प्रकार का सांस्कृतिक मिलन और संवाद का आयोजन अन्य जगहों पर भी किया जाए, जिससे सांस्कृतिक समरसता को बढ़ावा मिलेगा।

श्रीमती कान्ता कर्दम (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं माननीय सदस्या द्वारा उठाये गये विषय से स्वयं को सम्बद्ध करती हूं।

श्री अजय प्रताप सिंह (मध्य प्रदेश) : महोदय, मैं भी माननीय सदस्या द्वारा उठाये गये विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

डा. कल्पना सैनी (उत्तराखंड) : महोदय, मैं भी माननीय सदस्या द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करती हूं।

SHRI ABIR RANJAN BISWAS (West Bengal): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

DR. AMAR PATNAIK (Odisha): Sir, I associate myself with the issue raised by the hon. Member.

MR. CHAIRMAN: Shrimati Mamata Mohanta; not present. Now, Shri P. Wilson.